सेन्ट्रल जोन इंश्योरेन्स एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से सम्बद्ध)

प्रभांजलि, 33, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. बी. सान्याल

परिपत्र क्र. : 01/2015

दिनांक : 01.01.2015

मध्य क्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के नाम

प्रिय साथियों,

विषय : स्वागत नववर्ष 2015

वर्ष 2014 की विदाई व नववर्ष 2015 के आगमन के अवसर पर हम देश व दुनिया के तमाम मेहनतकशों के साथ ही मध्यक्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों व उनके परिजनों को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करते है।

बीता वर्ष अनेक घटनाओं को समाहित कर इतिहास का हिस्सा बन गया। जाते जाते बीते वर्ष 2014 ने बीमा कर्मियों ही नही प्रजातांत्रिक मूल्यों, जनतंत्र और प्रजातांत्रिक संस्थाओं पर विश्वास करने वाले समस्त जनतंत्र प्रेमियों के लिए कटु अनुभव व काला अध्याय का अहसास करा दिया। हमने देखा की किस तरह देश की सर्वोच्च जनतांत्रिक संस्था संसद के उच्च सदन राज्य सभा में 2008 से लंबित बीमा कानून संशोधन विधेयक को शीत कालीन सत्र के अंतिम समय तक पेश कर, पारित करने के जरिये, बीमा क्षेत्र में 26% की वर्तमान विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ा कर 49% करने व आम बीमा क्षेत्र की सार्वजनिक कंपनियों के शेयरों में विनिवेशीकरण, यानी, निजीकरण के रास्ते पर धकेलने की अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी और अमरिकी साम्राज्यवाद की मांग को पूरी करने में विफल वर्तमान मोदी नेतृत्व वाली भाजपानीत राजग सरकार ने संसदीय मूल्यों और तमाम प्रजातांत्रिक, संवैधानिक नियमों को बलायताक रख कर एकतरफा अध्यादेश जारी कर उसे अमल में लाने का ऐलान कर दिया। यही नहीं, वो तमाम नीतिगत कार्य जिन पर संसदीय जनतंत्र में अंतिम फैसला लेने और नीति निर्धारक इकाई के रूप में निर्णय का हक संसद को है वे भी, संसद से परे अध्यादेशों के जरिये लागू किये जा रहे है। कोयला ब्लाक की नीलामी पर भी अध्यादेश जारी कर दिये गये, भू-अधिग्रहण के मामलों के लिये भी अध्यादेश जारी कर दिये गये। ये किस बात के संकेत है। दुनिया के सबसे बड़ी प्रजातांत्रिक देश में संसद की ऐसी अवमानना और प्रजातांत्रिक संस्थाओं के प्रति ऐसी हिकारत की मिशाल शायद दुनिया में बहुत कम ही देखने को मिलेगी लेकिन, भारत की आम जनता ने विदाई बेला के ठीक पूर्व वर्ष 2014 में यही अनुभव किया है।

बीते वर्ष ने जाते-जाते जहां एक ओर आंतकी हमलो में पाकिस्तान में नन्हीं जानों की सीनों को, खिलने के पहले ही गोलियों से छलनी होते देखा तो, भारत में नस्ली हिंसा में बेगुनाह आदिवासियों के खून की होली देखी, आसाम में। यहीं नहीं, हमनें देखा किस तरह कांग्रेस के कुकर्मों से उपजे जनअसंतोष का लाभ उठाकर सबसे न्यूनतम मत प्रतिशत के समर्थन, लेकिन बहुमत सांसद संख्या के साथ, सरकार तक पहुंची, भाजपा के सत्तासीन होने के बाद देश की साम्प्रदायिक फिजाओं की हवाऐं जहरीली की जा रही है। श्रम कानूनों में तब्दीली का ऐलान हो रहा है, सब कुछ बाजार के हवाले कर देने की ऐसी होड़ दिख रही है कि उसमें आम आदमी की मानो कोई जगह ही नहीं।

हमने, पहले ही अनेकों बार यह कहा है कि आतंकवाद का कोई धर्म नही होता ठीक उसी तरह से, साम्प्रदायिकता चाहे बहुसंख्यक की हो या अल्पसंख्यक की दोनों ही मेहनतकश की दुश्मन है। इस परिप्रेक्ष्य में ही हमनें देखा कि मेहनतकशों की एकताबद्ध संघर्ष ने 5 दिसंबर 2014 को लाखों करोड़ों की संख्या में झण्डों, रंगों से परे एक मेहनतकश मजदूर के रूप में समस्त ट्रेड यूनियनों के संयुक्त आह्वान पर श्रमिक व मेहनतकश जमात ने उन पर हो रहे हमलों के खिलाफ प्रतिरोध की जबर्दस्त अभिव्यक्ति की।

हमें विश्वास है कि, दुनिया के स्तर पर विगत वर्ष विकसित हुए जन प्रतिरोध के स्वर नववर्ष में भी और तीव्र होगें। हमें विश्वास है कि, भारत के श्रमिक वर्ग और आम अवाम, मेहनतकश विरोध नीतियां हो या जनतंत्र की हिफाजत में, साम्प्रदायिकता के खिलाफ हो या आपसी भाईचारे व अनेकता में एकता के हमारे सामाजिक ताने बाने की रक्षा का संघर्ष, बेहतर जीवन के लिये संघर्ष हो या उद्योग की प्रगति के अनुरूप बेहतर वेतन हासिल करने का संघर्ष, इन सब में, नववर्ष में उपजी चुनौतियों का मुकाबला करने आगे बढ़ेंगे। पुन: एक बार इसी विश्वास के साथ आप सभी को नये साल की क्रांतिकारी शुभकामनाऐं।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

आपका साथी

(बी. सान्याल)

महासचिव

मुद्रक : एक्सेल ऑफसेट प्रिन्टर्स, फूल चौक, रायपुर (छ.ग.) दूरभाष : 0771-4053295